दौड़

मुझे नहीं पता मैं कब से एक दौड़ में शामिल हूं
विशाल अंतहीन भीड़ है जिसके साथ दौड़ रहा हूं मैं
गलियों में, सड़कों पर, घरों की छतों पर, तहखानों में
तनी हुई रस्सी पर सब जगह दौड़ रहा हूं मैं
मेरे साथ दौड़ रही है एक भीड़/
जहां कोई भी कम नहीं करना चाहता
अपनी गति

मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम मैं भीड़ के साथ दौड़ रहा हूं
या भीड़ मेरे साथ
अकेले पीछे छूट जाने के भय से दौड़ रहा हूं
या आगे निकल जाने के उन्माद में
मुझे नहीं पता मैं अपने पड़ोसी को परास्त करना चाहता हूं
या बचपन के किसी मित्र को
या आगे निकल जाना चाहता हूं किसी अनजान आदमी से
मैं दौड़ रहा हूं बिना यह जाने कि कौन है मेरा प्रतिद्वंद्वी

जब शामिल हुआ था दौड़ में/
मुझे दिखाई देती थीं बहुत-सी चीजें
खेत, पहाड़, जंगल
दिखाई देते थे पुल, नदियां, खिलौने और बचपन के खेल
दीखते थे मित्रों, रिश्तेदारों और परिचितों के चेहरे
सुनाई देती थीं पक्षियों की आवाजें,/
समुद्र का शोर और हवा का संगीत

अब नहीं दीखता है कुछ भी
न बारिश न धुंध
न खुशी न बेचैनी
न उम्मीद न संताप
न किताबें न सितार
दिखाई देते हैं सब तरफ एक जैसे लहूलुहान पांव
और सुनाई देती हैं सिर्फ उनकी थकी और भारी
और लगभग गिरने से अपने को संभालती हुई
धप् धप्प् धप्प्-सी आवाजें

तलुए सूज चुके हैं सूख रहा है मेरा गला
जवाब दे चुकी हैं पिंडलियां
भूल चुका हूं मैं रास्ते
मुझे नहीं मालूम कहां के लिए दौड़ रहा हूं और कहां पहुंचूंगा
भीड़ में गुम चुके हैं मेरे बच्चे और तमाम प्यारे जन
कोई दिखाई नहीं देता है दूर-दूर तक जो मुझे पुकार सके
या जिसे पुकार सकूं मैं कह सकूं कि बस, बहुत हुआ अब

हद यह है कि मैं बिलकुल नहीं दौड़ना चाहता
एक धावक की तरह पार नहीं करना चाहता/
यह छोटा-सा जीवन
नहीं लेना चाहता हांफती हुई सांसें
हद यही है कि फिर भी मैं अपने आपको दौड़ता हुआ पाता हूं
थकान से लथपथ और बदहवास। ◆

कुमार अंबुज